अनुभव

भाषा शिक्षण : कुछ प्रयोग

रूपा

शिक्षण प्रक्रियाओं में भाषा शिक्षण ऐसा क्षेत्र है जिस पर न सिर्फ अन्य विषयों की बुनियाद खड़ी होती है बल्कि जिससे बच्चे का ज्ञान और व्यक्तित्व भी नए आयाम ग्रहण करता है। अर्थात् भाषायी अनुभव बच्चे के संज्ञानात्मक/गैर-संज्ञानात्मक पहलुओं को प्रभावित करते हैं। यह लेख बच्चों के साथ भाषा शिक्षण में किए गए कुछ प्रयोगों के माध्यम से बताता है कि समुचित रूप से ध्यान देने पर कैसे वे भाषायी चुनौतियों को सहजता और सुगमता से पार कर सकते हैं।

जब मुझे कक्षा-दो पढ़ाने के लिए मिली तो एक गहरा सवाल मेरे दिमाग में घर किए बैठा था। सवाल उस विषय से जुड़ा था, जिसका प्रभाव एक बच्चे की पूरी जिन्दगी पर पड़ता है। भाषा वह विषय है जिस पर बच्चों की न सिर्फ स्कूली शिक्षा निर्भर करती है बल्कि बच्चों के व्यक्तित्व का पूरा विकास भी निर्भर करता है। जो सवाल मुझे दिन-रात परेशान कर रहे थे वे कक्षा में भाषा शिक्षण की पद्धति को लेकर थे कि, कैसे मैं अपनी कक्षा में भाषा शिक्षण को रुचिकर और अर्थपूर्ण बनाऊं ? कक्षा-दूसरी में बच्चों को लिखना-पढ़ना सिखाने की प्रक्रिया कैसी होनी चाहिए ? बच्चों के भाषा संबंधी विकास को कैसे सफल एवं रोचक बनाया जाए ? भाषा कौशलों को विकसित करने की प्रक्रिया को किस तरह उस दिशा में ले जाया जाए जहां बच्चे स्वतंत्र होकर आत्म-विश्वास के साथ भाषा का अनेक प्रकार से प्रयोग करना सीख सकें ?

अंततः मैं अपनी कक्षा में भाषा शिक्षण के लिए एक ऐसी समर्थ पद्धति चाहती थी जो सिर्फ भाषा संबंधी विकास ही न करे बल्कि बच्चों को भाषा के साथ खेलना भी सिखाए और भाषा पढ़ने-लिखने के अनुभवों को बच्चों के लिए मजेदार एवं यादगार बना सके। और साथ ही बच्चों को अपने स्तर पर पढ़ने-लिखने के लिए प्रेरित करे।

भाषा शिक्षण की कक्षाओं के बारे में आम अनुभव है कि वहां अक्सर भाषा शिक्षण केवल पाठ पढ़ाने एवं पाठ के अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर हल करवाने तक ही सीमित रह जाता है। यह प्रक्रिया उस समय और नीरस हो जाती है जब कक्षा में पुस्तक पढ़ने के लिए अध्यापक प्रायः किसी एक बच्चे को नियुक्त कर देते हैं। पूरी कक्षा पाठ को उस बच्चे के पीछे-पीछे घंटों तक दोहराती रहती है और इसका परिणाम यह होता है कि पढ़ना-लिखना सीखने की शुरुआत में ही अक्सर बच्चों की रुचि किताबें पढ़ने में खत्म हो जाती है। फलस्वरूप बच्चे किताबों से दूरी बना लेते हैं और अपने लिए अन्य मजेदार विकल्पों की खोज करने लग जाते हैं जिसमें टी. वी. देखना या कार्टून देखना उनके मनोरंजन का साधन बन जाते हैं। मेरा प्रयास इसी दिशा में था, कि किस प्रकार मैं बच्चों के अन्दर किताबों के प्रति रुचि विकसित करूं ताकि बच्चे बार-बार पुस्तकों की ओर आकर्षित हो सकें। परन्तु कक्षा-2 के बच्चों में किताबों के प्रति लगाव पैदा करने के लिए पहली जरूरी शर्त यह है कि उन्हें

लेखक परिचय :

दिल्ली विश्वविद्यालय के गार्गी कॉलेज से बीएलएड, गत दो वर्षों से दिल्ली के एक एमसीडी स्कूल में शिक्षिका के रूप में कार्यरत एवं दिल्ली विश्वविद्यालय में एमएड की विद्यार्थी।

सम्पर्क :

द्वारा श्री नाथू सिंह, मकान नं.-253,
खामपुर, पोस्ट-अलीपुर, दिल्ली-110036

किताबों में लिखी भाषा समझ आए। यानी जो कुछ भी किताबों में लिखा/छपा है वह बच्चों को पढ़ना और समझ आना चाहिए। तभी उनकी रुचि आगे किताबें पढ़ने में विकसित हो पाएगी।

मेरे लिए दूसरा मुद्दा था कि मैं किस प्रकार अपने बच्चों को उस स्तर तक ले जाऊं जहां वे स्वतंत्रता के साथ अपने भाषा कौशलों का कुशलता से प्रयोग करते हुए पढ़ और समझ सकें। भाषा शिक्षण से जुड़े मत-मतान्तरों से एक हद तक मैं परिचित थी। भाषा शिक्षण के संदर्भ में एक मत यह है कि भाषा लिखना-पढ़ना सीखने की प्रक्रिया अनेक मूल ध्वनियों पर निर्भर करती है। इस विचार को मानने वालों के अनुसार भाषा शिक्षण की शुरुआत स्वर और व्यंजन सीखने से होनी चाहिए। इस प्रक्रिया में मूल ध्वनियों से अक्षर, अक्षर से शब्द, शब्द से वाक्य तथा वाक्य से गद्यांश तक का सफर सीढ़ीनुमा तरीके से तय किया जाता है। यह भाषा सीखने की प्रक्रिया को छोटे-छोटे खंडों में बांटकर सीखने पर जोर देता है। इस पद्धति की एक समस्या यह है कि इसमें बच्चे अर्थपूर्ण तरीके से भाषा सीखें इसके लिए कोई स्थान नहीं रह जाता और बिना अर्थ समझे भाषा सीखने की प्रक्रिया नीरस व बोझिल होने लगती है।

भाषा शिक्षण के संदर्भ दूसरा मत है कि भाषा सीखने की प्रक्रिया को छोटे-छोटे खंडों में नहीं बांटा जा सकता। अतः इस विचार को मानने वाले पूर्ण भाषा प्रणाली की पैरवी करते हैं जिसमें भाषा का अर्थ समझने पर अधिक जोर दिया जाता। इनके अनुसार भाषा सीखने की प्रक्रिया अर्थपूर्ण शब्दों व वाक्यों से शुरू होती है न कि ध्वनियों को रटने से। जब बच्चे सुनते समय भाषा को पूर्ण रूप में स्वीकार करके अर्थ समझने की क्षमता रखते हैं तो पठन सामग्री देते हुए वह भी उसी रूप में क्यों न हो जिस रूप में वे सुनते हैं।

इन्हीं मत-मतान्तरों के बीच मैंने अपनी कक्षा में भाषा शिक्षण के संदर्भ में जो प्रयोग किए मैं उनकी चर्चा यहां करना चाहूंगी। कक्षा-2 में मैंने पढ़ने की शुरुआत कविताओं और चित्रों पर आधारित कुछ कहानियों से की। सबसे पहले मैंने अपनी कक्षा में मुद्रित और लिखित सामग्री से समृद्ध वातावरण तैयार करने की कोशिश की। इस लिखित एवं मुद्रित सामग्री से समृद्ध वातावरण के द्वारा मैं बच्चों के आस-पास कुछ रोचक व सरल पाठ्य सामग्री प्रस्तुत करना चाहती थी ताकि बच्चे नई-नई चीजों को देखकर उन्हें पढ़ने की कोशिश कर सकें। हमने ऐसा समृद्ध वातावरण बनाने के लिए कक्षा में कविताएं लिखकर चित्रों सहित लगाईं। हमने कक्षा में एक कहानियों का कोना भी बनाया, शब्द दीवार बनाई तथा बच्चों की रचनाओं के लिए स्थान देने के लिए 'हमारा कोना' बनाया। यह भी ध्यान रखा कि इस क्षेत्र में समस्त पाठ्य सामग्री बच्चों की पहुंच के अंदर हो ताकि बच्चे उनके करीब जाकर उन्हें पढ़ सकें, देख सकें और छू भी सकें। इसमें सहूलियत यह थी कि इस सारी सामग्री का प्रयोग मैं पूरी कक्षा के साथ एक ही समय में कर सकती थी। बच्चों के लिए यह एक ऐसी किताब की तरह था जो कक्षा में हर समय सभी के लिए खुली थी। यहां से शुरुआत हुई कक्षा में पढ़ने की आरंभिक क्रिया की।

इसके साथ कक्षा में अनेक गतिविधियां, जो बच्चों को पढ़ने में सहायता करती हैं, साथ-साथ चलती रहीं। मैंने एक ऐसी ही क्रिया सस्वर वाचन की शुरू की। शुरुआत में जब मैंने कक्षा में बच्चों के साथ मिलकर पाठ्यपुस्तक पढ़ने की कोशिश की तो मेरे सामने कई समस्याएं आईं। इन समस्याओं में सबसे बड़ी एक समस्या थी बच्चों का पढ़ने में ध्यान एकाग्र नहीं हो पाना। जब भी मैं किताब का कोई पाठ पढ़ाती तो बहुत से बच्चे पीछे छूट जाते तो कुछ बच्चे बहुत आगे निकल जाते और कई बच्चे तो अपनी ही कल्पनाओं में खो जाते। फलतः किसी को भी यह पता नहीं होता था कि हम कक्षा में क्या पढ़ रहे हैं। इस समस्या से मुक्ति के लिए मैंने बच्चों को पाठ पढ़ते समय शब्दों पर अंगुली फिराने का निर्देश दिया और साथ ही पाठ में लिखी हुई बातें अपने पीछे दोहराने को कहा। इस तरह बच्चों को मौखिक भाषा का उसके लिखित रूप से मेल करके समझने का मौका मिला। मौखिक भाषा का लिखित रूप से क्या संबंध है यह जानकारी उन्हें इस गतिविधि से ज्यादा बेहतर रूप में मिली। मौखिक भाषा के लिखित रूप के साथ ताल-मेल बैठाने की क्रिया में उनकी एकाग्रता में भी सुधार आया।

इस गतिविधि को सफल बनाने के लिए मुझे अपनी पढ़ने की गति को धीमा रखना पड़ा तथा पाठ को शुरुआती दौर में छोटी-छोटी टुकड़ियों में बांटकर पढ़ाना पड़ा। हर टुकड़ी के खत्म होने के बाद बच्चों को पढ़ाई गई टुकड़ी स्वयं पढ़ने को कहा जाता। अतः बच्चे को अपने पढ़ने के स्तर का भली-भांति ज्ञान होता कि वह क्या-क्या पढ़ पा रहा है। यह गतिविधि कक्षा में लगभग डेढ माह तक चली। इसके बाद हमने पाठ को टुकड़ियों में पढ़ने के बजाय पूरा पढ़ना शुरू कर दिया और अब बच्चों को पढ़ते समय अंगुली प्रयोग करने की आवश्यकता भी नहीं पड़ती थी।

इसके साथ ही बच्चों की पढ़ने में रुचि के विकास के लिए एक अन्य प्रयास किया गया वह था बाल साहित्य का भरपूर प्रयोग। जब तक अध्यापक भाषा शिक्षण का दायरा केवल पाठ्यपुस्तक तक सीमित रखेगा तब तक बच्चों में भाषा कौशलों का विकास पूर्णतः नहीं हो सकता। भाषा शिक्षण का मुख्य उद्देश्य बच्चों को भाषा प्रयोग में नवीनता लाना सिखाना होना चाहिए न कि पाठ के अंत में दिए गए प्रश्नों के उत्तर हल करना। यदि भाषा शिक्षण में

बाल-साहित्य का समुचित प्रयोग किया जाए तो यह बच्चों में पुस्तकों के प्रति रुचि का विकास करने के लिए उपयुक्त साधन हो सकता है। बच्चों के लिए बाल-साहित्य पढ़ना पाठ्यपुस्तक पढ़ने से ज्यादा मजेदार काम होता है क्योंकि बच्चे उसे मजे के लिए पढ़ते हैं और पढ़ते-पढ़ते वे कहानी के पात्रों और अनुभवों में खो जाते हैं। रुचिकर होने के साथ ही ऐसी रोचक गतिविधियां बच्चों का अपेक्षाकृत ज्यादा समय तक ध्यान केन्द्रित कर पाने में सक्षम होती हैं।

बाल-साहित्य पर काम करने के लिए मैंने बच्चों को कई समूहों में बांट दिया। हर समूह में 5-6 बच्चे तथा एक समूह नेता होता था। कक्षा में ऐसे करीब आठ समूह बने। हर समूह को पढ़ने के लिए एक किताब/कहानी मिलती। समूह के सभी सदस्य गोला बनाकर बैठते और गोले के बीच में किताब इस प्रकार रखी जाती ताकि सभी सदस्य किताब में लिखित टेक्स्ट व चित्रों को देख सकें। किताब पढ़ने की पहल अंगुली का प्रयोग करते हुए समूह नेता द्वारा की जाती। बाकी सदस्य ध्यान से देखते-सुनते और शब्दों व ध्वनियों के ताल-मेल को समझने का प्रयास करते। कहानी प्रायः चित्र आधारित तथा छोटी होती। जिन कहानियों/किताबों को समूह में पढ़ने के लिए चुना गया उसमें यह ध्यान रखा गया कि उनकी भाषा सरल हो, रोचक हो और चित्रों का सुन्दर व समुचित उपयोग किया गया हो। यह भी ध्यान रखा गया कि प्रत्येक पृष्ठ पर चित्रों के साथ दो या तीन वाक्य मोटे टाइप में लिखे हों। समूह नेता के पढ़ने के बाद समूह का हर बच्चा उस कहानी को बारी-बारी से पढ़कर सुनाता। पढ़ते समय शब्दों और वाक्यों को बिना तोड़े पढ़ने पर जोर दिया जाता। किसी वाक्य में बच्चे के अटक जाने पर शेष सदस्य या समूह नेता उसकी पढ़ने में मदद करते।

कक्षा में पढ़ने के लिए विभिन्न गतिविधियां साथ-साथ चलती रहीं। इस तरह समूह में पढ़ने की क्रिया ने बच्चों का आत्म-विश्वास बढ़ाने के साथ-ही समूह में मिलकर एक-दूसरे के साथ काम करने की आदत का भी विकास किया। समूह में इस तरह पढ़ने की यह क्रिया लगभग दो महीनों तक चली। इस दौरान काफी बच्चे स्वयं पढ़ना सीख गए। फिर हमने इन समूहों को तोड़कर दो-दो की जोड़ियों में पढ़ने की शुरुआत की। अब कहानियों की विषयवस्तु बड़ी/ज्यादा होने लगी और कहानी भी बड़ी होने लगी। जोड़ियों में पढ़ना बच्चों को ज्यादा मजेदार लगा क्योंकि अब किताब उनके बहुत पास होती थी और अब पढ़ने के लिए उन्हें अपनी बारी का इंतजार भी नहीं करना पड़ता था। कुछ बच्चे अभी भी ऐसे थे जो पुस्तक पढ़ने में अभी तक खुद को सहज महसूस नहीं करते थे। ऐसे बच्चों के साथ समूह में पढ़ने का काम जारी रखा गया। जैसे-जैसे बच्चों के पढ़ने के स्तर में सुधार आता रहा, बच्चों ने अकेले पढ़ना शुरू कर दिया। इस प्रकार बच्चों की पुस्तकों में रुचि दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगी।

बच्चों द्वारा पढ़ी जाने वाली पुस्तकों व कहानियों की समझ को जांचने के लिए बच्चों को कक्षा में अपनी किताब/कहानियों के विषय में बात करने को कहा जाता। शुरुआत में बच्चे अपनी कहानियों व पुस्तकों पर बात करने में असहज महसूस करते और झिझकते थे। लेकिन धीरे-धीरे वे अपनी झिझक से बाहर निकल पाने में सक्षम होने लगे। अब वे अपनी कहानियों व किताबों के बारे में अपनी कक्षा में अपने साथियों से बात करने को उत्सुक रहते हैं। हमने कक्षा में कहानियों की चर्चा को बातचीत तक सीमित न रखकर उन्हें लिखकर बताने का काम भी शुरू कर दिया। बच्चों को पत्र लिखकर अपनी बातें अपने मित्रों को बताने के लिए प्रेरित किया गया। साथ ही स्वयं नई-नई कहानियां लिखने को प्रेरित किया।

इन सब तरीकों के अलावा मैंने अपनी कक्षा में बारहखड़ी का भी प्रयोग किया। बारहखड़ी का प्रयोग बच्चों को विभिन्न ध्वनियों के मेल से बनी नई ध्वनि से परिचित कराने के लिए किया गया। ताकि वे यह जान सकें कि किसी ध्वनि में अन्य ध्वनि मिलाने पर बनने वाले नए शब्द की कैसी ध्वनि है। बारहखड़ी का इस्तेमाल बच्चों को विभिन्न ध्वनियों को तोड़कर समझने की बजाय उन्हें जोड़कर समझने के लिए किया गया। इसकी मदद से बच्चों ने शब्द-संरचना की जानकारी प्राप्त की तथा उन्हें नए शब्दों के उच्चारण में भी सहायता मिली। लेकिन हमारा जोर बार-बार शब्द या वाक्य को बिना तोड़े पढ़ने पर ही रहा।

मेरी कक्षा में किए गए इस छोटे से प्रयोग ने मुझे तो भाषा सीखने-सिखाने की बारीकियों से परिचित कराया ही साथ ही मेरे बच्चों को भाषा सीखने के लिए एक नया नजरिया भी प्रदान किया। इससे बच्चों में यह समझ विकसित हो पाई कि पढ़ने का मतलब केवल लिखित भाषा का सही उच्चारण करना भर नहीं है बल्कि उसका अर्थ समझना भी है। मेरे द्वारा इस प्रयोग से बच्चों में भाषा कौशलों का विकास तो हुआ ही साथ ही उनके व्यक्तित्व में भी निखार आया। जो बच्चे अपनी बात कहने में असहज महसूस करते थे, अध्यापक के डर से सहमे रहते थे वे भी अपनी बात कहने व अपना मत रखने को उत्सुक दिखाई देने लगे। पढ़ने के लिए विकसित हुई रुचि ने उन्हें न सिर्फ नई किताबें खोजने के लिए मजबूर किया बल्कि अपनी कल्पनाएं और विचारों को कागज पर लिखने के लिए भी प्रेरित किया। इस पूरे प्रयोग के दौरान बच्चों को भाषा सीखने का एक ऐसा माहौल मिला जिसमें बच्चों ने लिखना-पढ़ना अनोखे ढंग से सीखने के साथ-साथ अपने स्कूली शिक्षा के अनुभवों में कुछ यादगार क्षण प्राप्त किए। बच्चों द्वारा खुद कहानियों की किताब लिखना/बनाना एक ऐसा ही अनमोल अनुभव है। ◆